6/04/20

B.A. (Part – III)

Paper – VI

Cotton Textile Industry of Japan :

मैजी शासनकाल में सूती वस्त्र उद्योग :–

जापान में आधुनिक प्रकार का वस्त्र बनाने का कारखाना 1857 ई० में एक सामन्त द्वारा स्थापित किया गया था। इससे पहले जापान के नागरिक हाथ से चलने वाले करघों से कपड़ा बुनते थे, धीरे-धीरे इस प्रणाली के तरीकों में सुधार किया गया और नवीन यंत्रों द्वारा कपड़ा बुनाई का कार्य होने लगा। सूती वस्त्र उद्योग का दूसरा कारखाना एक व्यापारी द्वारा 1872 ई० में लगाया गया। समय के साथ-साथ जब सरकार ने इस उद्योग को विकसित होते देखा तो स्वयं ही विकास के इस कार्य में अपना हाथ बटाना शुरु किया तथा पश्चिमी देशों से आधुनिक यंत्रों को आयात करके इसकी स्थापना की।

सूती वस्त्र उद्योग के क्षेत्र में पर्याप्त प्रगति 1890 के बाद ही की जा सकी। 1890 तक वस्त्र उद्योग के क्षेत्र में कृषि एवं गाँवी बुनाई करने का कार्य महिला श्रमिक ही करती थी। बाकी मिलों की हालत काफी खराब थी तथा श्रमिकों की मजदूरी दर भी काफी कम थी।

सूती वस्त्र उद्योग विश्व में अपना स्थान बना रहा था। 1900 से 1913 तक में कताई मिलों का उत्पादन 150 बढ़ा। रुई का अधिकतम उपभोग करने वाला

विश्व में प्रथम देश जापान बन गया। जापान ने चीन के बाजार में भारत तथा ब्रिटेन को नहीं जमने दिया। जापान का सूती वस्त्र उद्योग मुख्यतः कपास पर निर्भर था। ऊन का उपयोग एक देशी महत्वपूर्ण शाखा थी जो पश्चिमी देशों के सम्पर्क से उत्पन्न हुई थी। धीरे-धीरे कुछ अन्य फर्में स्थापित हुई जो सैनिक वर्दी, कपड़ा तथा कम्बल बनाती थी।

प्रथम विश्व युद्ध के समय तथा उसके बाद के समय में इस उद्योग को तीव्र विकास के लिए पर्याप्त समय मिल गया। युद्ध के समय जापान को पूर्वी देशों का पूरा बाजार मिल गया। इससे पूर्वी देशों में ब्रिटेन का एकाधिकार समाप्त हो गया।

द्वितीय विश्वयुद्ध ने सूती-वस्त्र उद्योग को बहुत बुरी तरह से क्षतिग्रस्त कर दिया। 1937 ई० में कार्यरत 285 मिलों की जगह 1945 ई० में सिर्फ 38 मीलें बची थी। युद्धोत्तर काल में युद्ध की सामग्री की आवश्यकता को देखते हुए सूती वस्त्र उद्योग को खत्म करके युद्ध में लगने वाले ~~सु~~ वस्तुओं का कार्य शुरू कर दिया गया। इस प्रकार इन कारखानों को युद्ध सामग्री निर्माण कारखानों पर बदल दिये थे। सूती-वस्त्र

उद्योग की दशा और बिगड़ गई।

सूती वस्त्र उद्योग की वर्तमान स्थिति :-

वर्तमान समय में सम्पूर्ण उद्योग पर दस विशाल पूँजीवाली फर्मों का नियंत्रण है तथा करीब 8200 स्वतंत्र रूप से कार्य कुशल उत्पादक हैं। दस बड़ी फर्मों का नियंत्रण 108 मीलों पर है। इन सभी मिलों में कार्य दस फर्मों के अनुरूप होता है। इन मिलों में 1,50,000 श्रमिक कार्यरत हैं तथा स्वतन्त्र उत्पादकों के पास भी 1,60,000 श्रमिक कार्य करते हैं। इनमें 90 प्रतिशत स्त्री श्रमिक कार्य करती हैं।

इस प्रकार सूती वस्त्र उद्योग देश में ही नहीं बल्कि विश्व में अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाये हुए हैं। लेकिन हाल के कुछ वर्षों में रासायनिक तथा इन्जीनियरिंग के निर्यात में कमी आ रही है।